CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

चौखम्भा राजसेवा ग्रन्थमाला

२०

नित्यहोम-बलिवैश्वदेवविधिः

लेखक—याज्ञिकसम्राट्

वेदाचार्य पण्डित वेणीरामशर्मा गौड

चौखम्भा ओरियन्टालिया

वाराणसी दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्री: ॥

चौखम्भा राजसेवा ग्रन्थमाला

२०

नित्यहोम-बलिवैश्वदेवविधिः

लेखक—याज्ञिकसम्राट्

वेदाचार्य पण्डित वेणीरामशर्मा गौड

चौखम्भा ओरियन्टालिया

वाराणसी दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२

गोकुल भवन, के० ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी–२२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ६५८८९ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर

दिल्ली–११०००७ फोन : २२१६१७

© चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्रथम संस्करण १९८०

मूल्य रु० ~~[illegible]~~ 5/—

मुद्रक–श्रीगोकुल मुद्रणालय, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राक्कथन

नित्यहोम—शास्त्रोंकी आज्ञा है कि प्रत्येक मनुष्यको प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान-सन्ध्योपासन आदि के अनन्तर नित्य होम करना चाहिये। नित्य होम प्रातः और सायंकाल किया जाता है। साग्निक पुरुष स्थापित अग्निमें नित्य होम करते हैं और निरग्निक पुरुष 'पृष्टो दिवि-विधान' के अनुसार नित्य हवनकालमें अग्नि स्थापित करते हैं। निरग्निक लोगोंकी सुविधार्थ 'नित्यहोम और बलिवैश्वदेवविधि' पुस्तिकामें अग्निस्थापनपूर्वक हवन की विधि दी गयी है।

प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व हवनका मुख्य काल कहा गया है, उसके पश्चात् गौण काल है। सायङ्काल में जबतक पश्चिम दिशामें लाली दिखायी दे और ताराएँ अच्छी तरह न उगी हों, तभी तक हवनका मुख्य काल है, उसके बाद गौण काल है।

बलिवैश्वदेव—हम लोगोंकी जीवन-यात्रामें सहज ही हजारों जन्तुओं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की प्रतिदिन हिंसा होती है। जैसे—चलने-फिरनेमें, भोजनके प्रत्येक ग्रासमें तथा श्वास-प्रश्वासमें जीवकी हिंसा अवश्य होती है। प्राणधारी मनुष्यके लिये इन पापोंसे बचना कदापि संभव नहीं है। अतः इन पापोंसे मुक्त होनेके लिये ही महामहिमशाली महर्षियोंने पञ्चमहायज्ञका विधान बताया है। भगवान् मनु कहते हैं:—

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन्॥
तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्॥ (३।६८,६९)

'प्रत्येक गृहस्थके यहाँ चूल्हा, चक्की, बुहारी (झाड़ू), ऊखल और जलका पात्र—ये पाँच हिंसाके स्थान हैं। इनसे होनेवाली हिंसाकी निष्कृतिके लिये महर्षियोंने गृहस्थोंके लिये प्रतिदिन पञ्चमहायज्ञ करने का विधान किया है।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ और मनुष्ययज्ञ—ये [1]'पञ्चमहायज्ञ' कहे जाते हैं।

ब्रह्मयज्ञ—वेदोंके पठन-पाठन को 'ब्रह्मयज्ञ' कहते हैं। ब्रह्मयज्ञ करने से ज्ञानकी वृद्धि होती है। ब्रह्मयज्ञ करनेसे मनुष्य ज्ञानप्रद महर्षिगणका अनृणी और कृतज्ञ हो जाता है।

देवयज्ञ—अपने इष्टदेवकी उपासना के लिये परब्रह्म परमात्माके निमित्त अग्निमें किये हुए हवनको 'देवयज्ञ' कहते हैं। देवयज्ञसे नित्य और नैमित्तिक देवता तृप्त होते हैं।

भूतयज्ञ—कृमि, कीट, पशु और पक्षी आदिकी सेवाको 'भूतयज्ञ' कहते हैं। भूतयज्ञसे कृमि, कीट, पतङ्ग, पशु, पक्षी आदिकी तृप्ति होती है।

मनुष्ययज्ञ—क्षुधासे अत्यन्त पीडित मनुष्यके घर आ जाने पर उसकी

---

१. पञ्चमहायज्ञका विस्तृत विवरण जानने के लिये देखिए—मेरी 'यज्ञ-मीमांसा' अथवा कल्याणका विशेषाङ्क 'साधनाङ्क'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भोजनादिसे की जानेवाली सेवारूप यज्ञको 'मनुष्ययज्ञ' कहते हैं। मनुष्य-यज्ञसे धन, आयु, यश और स्वर्गादिकी प्राप्ति होती है।

पञ्चमहायज्ञको ही 'बलिवैश्वदेव' कहते हैं। बलिवैश्वदेव प्रतिदिन एक बार होता है। श्राद्धके दिन साग्निकको श्राद्धके प्रथम निरग्निकको श्राद्धके अन्तमें बलिवैश्वदेव करना चाहिये। नान्दीमुख श्राद्धमें निरग्निकको भी श्राद्धके प्रथम ही बलिवैश्वदेव करना चाहिये।

जननाशौच और मरणाशौचमें 'बलिवैश्वदेव' नहीं होता है। पाकके अभावमें आमान्न, फल, शाक, पत्र, मूल आदिसे भी बलिवैश्वदेव होता है। अग्निके अभाव में जल और पृथ्वी आदिमें होता है साग्निकको विदेशमें ब्रह्मयज्ञमात्र करना चाहिये। बलिवैश्वदेव घरमें ही गृह्याग्निमें पत्नी आदि को करना चाहिये और निरग्निकको स्वयं बलिवैश्वदेव करना चाहिये।

बलिवैश्वदेवके प्रथम अतिथि अभ्यागत उपस्थित हो जायँ, तो वैश्वदेवनिमित्त अन्नको पृथक् करके अतिथिको भिक्षा देनी चाहिये। यह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलिवैश्वदेव श्राद्धादिवत् विभक्तको पृथक्-पृथक् करना चाहिये और पाकैक्यमें ज्येष्ठको ही करना चाहिये। प्रवासी होने पर अविभक्त को भी करना चाहिये। प्रतिदिन बलिवैश्वदेव करनेसे अन्नादिकी शुद्धि और पापों का क्षय होता है। जो मनुष्य बलिवैश्वदेव किये बिना भोजन करते हैं, उन्हें पाप लगता है। गीता (३।१३) में कहा है—

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

'यज्ञसे शेष बचे हुए अन्नको खानेवाले श्रेष्ठ पुरुष समस्त पापोंसे मुक्त हो जाते हैं और जो पापी अपने शरीरके लिये ही अन्न पकाते हैं, वे तो पापको ही खाते हैं।'

अतः स्पष्ट है कि बलिवैश्वदेवसे बचा हुआ अन्न 'यज्ञशिष्ट अन्न' कहलाता है, जो अमृतके सदृश होता है। अतः प्रत्येक मनुष्यको आत्मकल्याणार्थ प्रतिदिन बलिवैश्वदेव करना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलिवैश्वदेव में उड़द, चना, मसूर, कोदों, कुलथी, क्षार लवण, मटर, तैल-पक्व, पर्युषित अन्न, भुक्तशेष अन्न आदि वर्जित हैं।

वैश्वदेवनिमित्त अन्नको पृथक् करके बलिवैश्वदेव करना—यह 'स्मार्त-सम्प्रदाय' हैं और निवेदित अन्नसे बलिवैश्वदेव करना—यह 'वैष्णवसम्प्रदाय' है।

'नित्यहोम और बलिवैश्वदेवविधिः' लघुपुस्तिकामें मैंने अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी (महामहोपाध्याय पण्डित श्रीविद्याधरजी गौड) के द्वारा सम्पादित 'नित्यकर्म-प्रयोग' से कुछ सहायता ली है।

अन्तमें मैं चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसीके अध्यक्ष महोदयको विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने 'नित्यहोम और बलिवैश्वदेवविधिः' का प्रकाशन कर धार्मिक-समाजका महान् कल्याण किया है।

श्रावण पूर्णिमा
रक्षाबन्धन
संवत् २०३७

वेणीराम गौड वेदाचार्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्यहोम-बलिवैश्वदेवविधिः

नित्य होम-विधिः

प्रातःकाल स्नान, सन्ध्या और तर्पण आदि के अनन्तर नित्य होम होता है। नित्य होम प्रातः और सायंकाल करना चाहिये।

पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम कर के अपनी दायें हाथ की अनामिका अङ्गुली में कुश की पवित्री धारण करें और जल लेकर निम्नलिखित संकल्प करें—

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (अमुक-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्माऽहम् , अमुकगुप्तोऽहम्) श्रीपरमेश्वरप्रीतये सायंप्रातर्होमं करिष्ये ।

पश्चात् वेदी अथवा ताम्र-कुण्ड में पञ्चभूसंस्कार करना चाहिये। तीन कुशों से भूमि अथवा ताम्र-कुण्ड को झाड़ दें और उन कुशों को ईशानकोण में फेंक दें। पश्चात् गोमय और जल से लेपन करें। अनन्तर स्रुवा अथवा तीन कुशों द्वारा उत्तरोत्तर क्रम से तीन-तीन पूर्वाग्र रेखाएँ करें। उल्लेखन क्रम से अनामिका और अङ्गुष्ठ से तीन बार मृत्तिका उठाकर ईशानकोण में फेंक दें, फिर वहाँ जल छिड़कें। इस प्रकार संस्कार करके निम्नाङ्कित मन्त्र से वहाँ अग्नि ले आवें।

अग्न्याहरणमन्त्र

अन्वग्निरित्यस्य पुरोधा ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्यानयने विनियोगः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ अन्न्वग्निरुषसामग्रमक्ख्यदन्न्वहानि प्प्रथमो जातवेदाः। अनुसूर्य्यस्य पुरुत्रा चरश्मीननु द्यावापृथिवी ऽआततन्थ॥

(शु० य० ११।१७)

'जिन अग्निदेव ने उषःकाल के प्रारम्भ में क्रमशः प्रकाश फैलाया, फिर समस्त उत्पन्न वस्तुओं का ज्ञान रखनेवाले जिन प्रमुख देव ने दिनों को अभिव्यक्त किया तथा सूर्य की किरणों को अनेक रंग-रूपों में प्रकाशित किया और जो प्रकाश एवं पृथिवी को सब ओर से व्याप्त किये हुए हैं, उन अग्निदेव का हम साक्षात्कार कर रहे हैं।'

इसके बाद निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर पूर्वोक्त वेदी अथवा ताम्रकुण्ड में अग्नि की स्थापना करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्निस्थापनमन्त्र

पृष्टो दिवीत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वैश्वानरो देवता अग्निस्थापने विनियोगः ।

ॐ पृष्टो दिवि पृष्टोऽग्निः पृथिव्यां पृष्टो व्विश्वा ऽओषधीरा विवेश । वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम् ॥ (शु० य० १८।७३)

'द्युलोक में [कौन आदित्यरूप से तप रहा है ? इस प्रकार] जिनके विषय में मुमुक्षुओं ने प्रश्न किया है पृथिवी अर्थात् अन्तरिक्षलोक में [कौन] 'विद्युत्' रूप से प्रकाशमान हो रहा है ?—इस प्रकार जिनके सम्बन्ध में जलार्थी लोगों द्वारा प्रश्न किया गया है, जो सम्पूर्ण ओषधियों (व्रीहि-यव आदि अन्नों) में व्याप्त होकर मनुष्यों की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिज्ञासा के विषय हो रहे हैं [अर्थात् ताप, फलपरिपाक और प्रकाश के द्वारा कौन समस्त प्राणियों का उपकार और उनके जीवन की रक्षा कर रहा है ? इस प्रकार जिन्हें जानने के लिये लोग प्रश्न करते हैं] तथा यज्ञ में अध्वर्युद्वारा बलपूर्वक मन्थन करने पर [यह किसके लिये मन्थन किया जा रहा है ?—ऐसा] लोगों ने जिनके विषय में प्रश्न किया है, वे वैश्वानर अग्निदेव दिन में और रात्रि में भी हमें नाश से बचावें।'

तदनन्तर निम्नाङ्कित मन्त्रों से अग्नि का उपस्थान करें।

उपस्थानमन्त्र

समिधाग्निमिति तं त्वेति च देवा ऋषयो गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥ (शु० य० ३ । १)

'हे ऋत्विग्गण ! आपलोग घृताक्त समिधा से अग्निदेव की परिचर्या करें तथा आतिथ्यकर्म से पूजनेयोग्य उन अग्निदेव को घी से प्रज्वलित करें। फिर इस प्रज्वलित अग्नि में सब ओर नाना प्रकार के हविष्य का हवन करें।'

ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन व्वर्द्धयामसि ।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ (शु० य० ३ । २)

'हे अङ्गिर—हे गतिशील अग्निदेव ! प्रसिद्ध गुणों से युक्त आपको हम समिधा और घी से प्रज्वलित कर रहे हैं। हे निर्जर देव ! आप अत्यन्त देदीप्यमान होइये।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके पश्चात् नीचे लिखे [व्याहृतियोंसहित तीन] मन्त्रों से अग्नि को प्रज्वलित करे।

अग्नि-प्रज्वालनमन्त्र

त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि-वायुसूर्या देवताः, ताꣳ सवितुरिति कण्व ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सविता देवता, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, विश्वानि देवेति नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सन्धुक्षणे विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ ताꣳ सवितुर्व्वरेण्यस्य चित्रामाऽहं व्वृणे सुमतिं व्विश्वजन्याम्। यामस्य कण्वो ऽअदुहत् प्रपीनाꣳ सहस्रधारां पयसा महीं गाम्॥ (शु० य० १७। ७४)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मैं वरण करनेयोग्य सविता की विचित्र (नाना प्रकार के मनोवाञ्छित फल देने में समर्थ) तथा सब लोगों का हित साधन करने वाली उस कल्याणमयी बुद्धि को अंगीकार करता हूँ, जिस गौरूपा बुद्धि का कण्व ऋषि ने दोहन किया था तथा जो अत्यन्त पुष्ट सहस्रों क्षीरधाराओं से युक्त और दूध से परिपूर्ण है।'

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ (शु० य० ३६ । ३)

'हम स्थावर-जङ्गमरूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करनेवाले उन निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर के भजने योग्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं।'

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न ऽआसुव ॥ (शु० य० ३० । ३)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हे सूर्यदेव ! सम्पूर्ण पाप दूर कर दो और जो कल्याणमय वस्तु है वह हमें प्राप्त कराओ।'

इस प्रकार इन मन्त्रों से अग्नि को प्रज्वलित करके बाएँ हाथ में तीन कुश रक्खें और खड़ा होकर प्रादेशमात्र लम्बी तीन घृताक्त समिधाएँ अग्नि में छोड़ें।

समिन्धन-मन्त्र

अग्निसमिन्धन का मन्त्र इस प्रकार है—

पुनस्त्वेति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्निसमिन्धने विनियोगः।

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वन्तन्व्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥

(शु० य० १२। ४४)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हे अग्निदेव ! आदित्य, रुद्र और वसुगण तुम्हें पुनः उद्दीप्त करें। हे वसुनाथ (धननायक) ! ऋत्विक् और यजमानरूप ब्राह्मण लोग यज्ञों के द्वारा तुम्हें फिर से प्रज्वलित करें तथा तुम भी हमारे अर्पण किये हुए घी से अपने शरीर को बढ़ाओ (प्रज्वलित करो) और तुम्हारे प्रज्वलित होने पर यजमान की कामनाएँ पूर्ण हों !'

फिर बैठकर जल से अग्नि का पर्युक्षण करे और घृत, दधि, खीर अथवा घृताक्त यव, चावल या तिल आदि से अथवा मधुर फल से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा चार आहुतियाँ दें।

सायंहोम

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रातर्होम

ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।

इसके पश्चात् अग्नि की प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें और—

त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्द आशीर्देवता भस्मधारणे विनियोगः ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥

(शु० य० ३ । ६२)

'जमदग्नि ऋषि और कश्यप मुनि का जो तीनों (बाल्य, यौवन, जरा) अवस्थाओं की आयु का समूह है तथा इन्द्र आदि देवताओं की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो तीनों (बाल्य, कुमार और यौवन) अवस्थाओं की आयु का समाहार है, वह हमें प्राप्त हो।'

इस मन्त्र से होम के भस्म को क्रमशः ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल और हृदय में लगावें। इसके बाद निम्नाङ्कित श्लोक पढ़कर न्यूनतापूर्ति के लिये भगवान् से प्रार्थना करें।

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

'यज्ञ में कर्म करनेवालों का जो कर्म प्रमादवश विधि से च्युत हो जाय, वह भगवान् विष्णु के स्मरणमात्र से ही पूर्ण हो सकता है, ऐसा श्रुति का वचन है।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'जिनके स्मरण और नामोच्चारण से तप, यज्ञ आदि क्रियाओं में न्यूनता की तत्काल पूर्ति हो जाती है, उन भगवान् अच्युत को मैं प्रणाम करता हूँ।'

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

अन्त में निम्नाङ्कित वाक्य कह कर यह हवन-कर्म भगवान् को अर्पण करें।

कृतेनानेन नित्यहोमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलिवैश्वदेव-विधिः

पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर सर्वप्रथम आचमन और प्राणायाम करें। पश्चात् निम्नाङ्कित मन्त्र से अपने दाएँ हाथ की अनामिका अङ्गुली में कुश की पवित्री धारण करें—

ॐ पवित्रे स्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्य-च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र-पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से अपने को पवित्र करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनन्तर निम्नाङ्कित सङ्कल्प करें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) मम गृहे कण्डनी-पेषणी-चुल्ली-सम्मार्जनी-गृहलेपनादि-हिंसाजन्य-दोषपरिहारपूर्वकान्नशुद्ध्यात्मसंस्कारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं बलिवैश्वदेवकर्म करिष्ये ।

पश्चात् लौकिक अग्नि प्रज्वलित करके अग्निदेव का निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए ध्यान करें—

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां ऽआविवेश ॥
(शु० य० १७। ९१)

'इस अग्निदेव के चार सींग, तीन पैर, दो सिर और सात हाथ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कामनाओं की वर्षा करनेवाला यह महान् देव तीन स्थानों में बँधा हुआ शब्द करता है और प्राणियों के भीतर जठरानलरूप से प्रविष्ट है।'

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर अग्निदेव को मानसिक आसन दें—

ॐ एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे ऽअन्तः।
स ऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः॥

(शु० य० ३२।४)

'यह अग्निस्वरूप परमात्मदेव ही सम्पूर्ण दिशा-विदिशाओं में व्याप्त है, यही हिरण्यगर्भरूप से सबसे प्रथम उत्पन्न (प्रकट) हुआ था, माता के गर्भ में भी यही रहता है और यही उत्पन्न होनेवाला है, हे मनुष्यो! यही सर्वव्यापक और सब ओर मुखोंवाला है।'

पश्चात् अग्निदेव को नमस्कार करके घर में बने हुए बिना नमक के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाक को अथवा घृताक्त कच्चे चावल को एक पात्र में रख लें और यज्ञोपवीत को सव्य कर अन्न की पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे पाँच मन्त्रों को क्रमशः पढ़ते हुए बारी-बारी से अग्नि में छोड़ें। (अग्नि के अभाव में एक पात्र में जल रखकर उसी में आहुतियाँ छोड़ सकते हैं।)

(१) देवयज्ञ

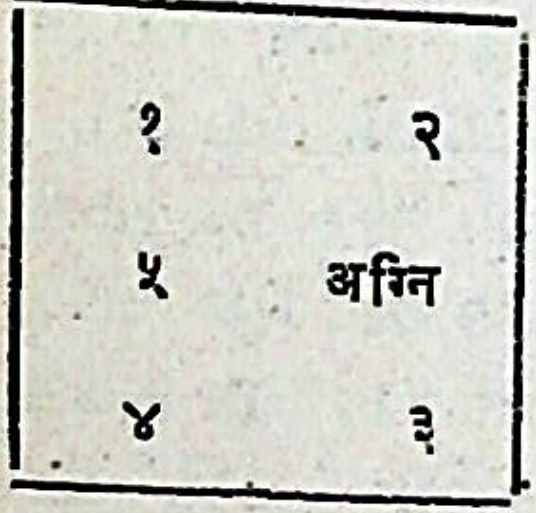

१ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम[1]।
२ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।
३ ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, इदं गृह्याभ्यो न मम।
४ ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम।
५ ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।

१. प्रथम मन्त्र का अर्थ इस प्रकार है—'ब्रह्माजी के लिये इस अन्न का हवन किया जाता है, यह ब्रह्माजी के लिये ही प्राप्त हो, इसपर मेरा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनः अग्नि के पास ही पानी से एक चौकोना चक्र बनाकर उसका द्वार पूर्व की ओर रखे और उसी में बतलाये जानेवाले स्थानोंपर क्रमशः बीस ग्रास अन्न देना चाहिये। जिज्ञासुओं की सुविधा के लिये नक्शा और ग्रास अर्पण करने के मन्त्र नीचे दिये जाते हैं। नकशे में केवल अङ्क रखा गया है, उसमें जहाँ एक है वहाँ प्रथम ग्रास और दो की जगह दूसरा ग्रास देना चाहिये। इसी प्रकार तीन से चलकर बीसतक क्रमशः निर्दिष्ट स्थानपर ग्रास देना चाहिये। नकशे के नीचे क्रमशः बीस मन्त्र दिये जाते हैं, एक एक मन्त्र पढ़कर एक-एक ग्रास अर्पण करना चाहिये।

अधिकार नहीं है।' इसी प्रकार अन्य मन्त्रों का अर्थ समझना चाहिये। २, ३, ४ और ५ में क्रमशः प्रजापति, गृह्या, कश्यप तथा अनुमति के लिये हवन किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

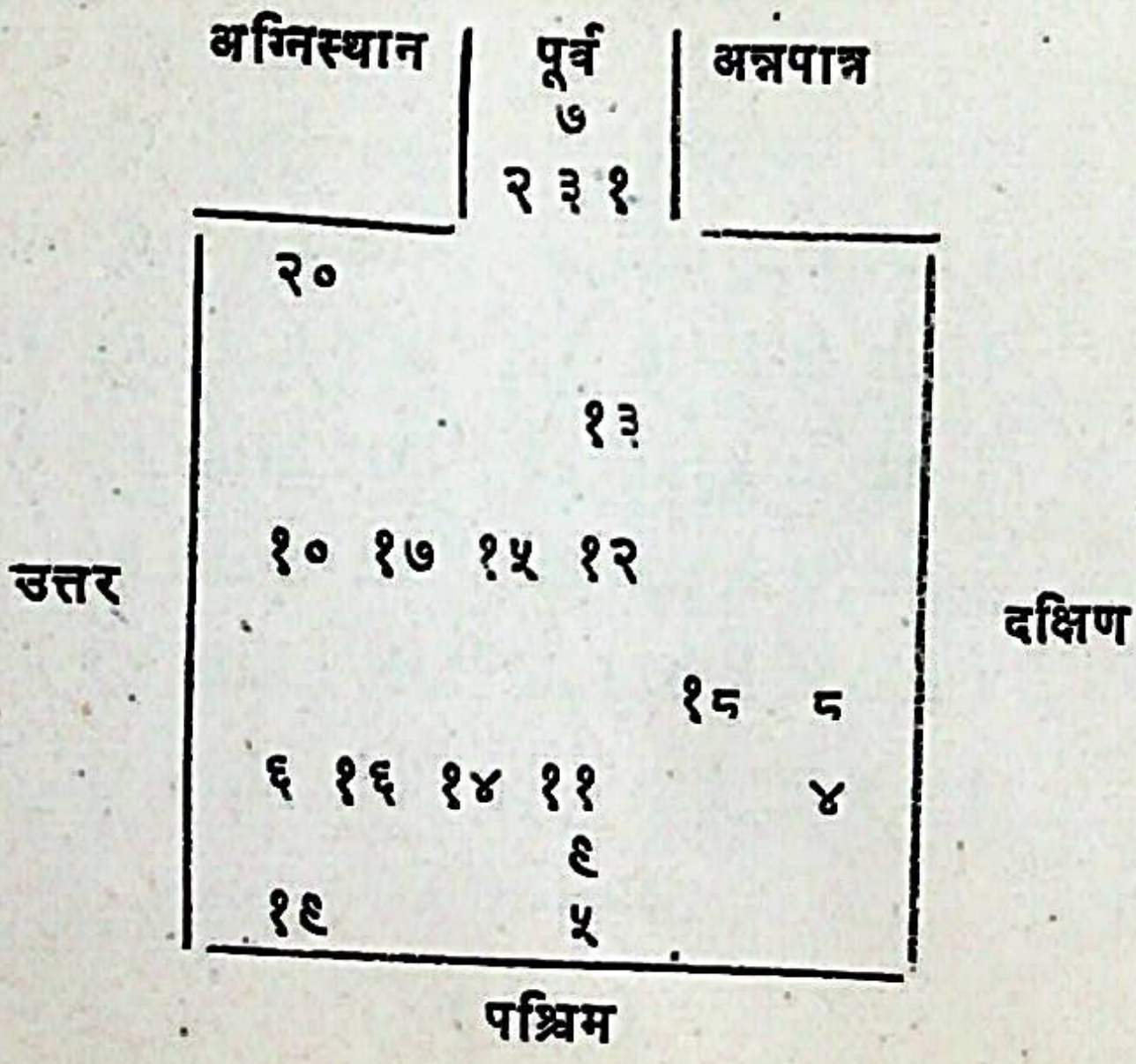

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२) भूतयज्ञ[1]

१ ॐ धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम ।
२ ॐ विधात्रे नमः, इदं विधात्रे न मम ।
३ ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।
४ ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।
५ ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।
६ ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।
७ ॐ प्राच्यै नमः, इदं प्राच्यै न मम ।

---

१. यज्ञोपवीत को सव्य करके पके हुए अन्न के सत्रह ग्रास अङ्कित मण्डल में यथायोग्य स्थान पर नीचे लिखे हुए मन्त्रोंद्वारा क्रमशः छोड़ दें ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८ ॐ अवाच्यै नमः, इदमवाच्यै न मम ।
९ ॐ प्रतीच्यै नमः, इदं प्रतीच्यै न मम ।
१० ॐ उदीच्यै नमः, इदमुदीच्यै न मम ।
११ ॐ ब्रह्मणे नमः, इदं ब्रह्मणे न मम ।
१२ ॐ अन्तरिक्षाय नमः, इदमन्तरिक्षाय न मम ।
१३ ॐ सूर्याय नमः, इदं सूर्याय न मम ।
१४ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ।
१५ ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६ ॐ उपसे नमः, इदमुपसे न मम ।

१७ ॐ भूतानां पतये नमः, इदं भूतानां पतये न मम।

(३) पितृयज्ञ

यज्ञोपवीत को अपसव्य करके बाएँ घुटने को पृथ्वी पर रखकर दक्षिण की ओर मुख करके हो सके तो साथ में तिल लेकर, पक्व अन्न अङ्कित मण्डल में निर्दिष्ट स्थानपर मन्त्र पढ़कर रख दें ।

१८ ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः, इदं पितृभ्यः स्वधा न मम।

निर्णेजनम्

यज्ञोपवीत को सव्य करके अन्न के पात्र को धोकर वह जल अङ्कित मण्डल में १६वें अङ्क की जगह मन्त्र पढ़कर छोड़ दें।

१९ ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः, इदं यक्ष्मणे न मम ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमात्मने निरञ्जनाय नमः, इदं यक्ष्मणे न मम ।

(४) मनुष्ययज्ञ

यज्ञोपवीत को माला की भाँति कण्ठ में करके उत्तराभिमुख हो पक्व अन्न अङ्कित मण्डल में २०वें अङ्क की जगह मन्त्रद्वारा छोड़ दें ।

२० ॐ हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः, इदं हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो न मम ।

(१) गोबलि

इसके बाद निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य भाव से ही गौओं के लिये बलि अर्पण करें—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥
इदमन्नं गोभ्यो न मम ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२) श्वानबलि

फिर यज्ञोपवीत को कण्ठ में माला की भाँति करके कुत्तों के लिये ग्रास दें। मन्त्र यह है—

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥
इदमन्नं श्वभ्यां न मम।

(३) काकबलि

पुनः यज्ञोपवीत को अपसव्य करके नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए कौओं के लिये भूमिपर ग्रास दें—

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ चान्नं मयार्पितम्॥

२ नि०CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इदमन्नं वायसेभ्यो न मम ।

(४) देवादिबलि

फिर सव्यभाव से निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर देवता आदि के लिये अन्न अर्पण करें—

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

(५) पिपीलिकादिबलि

इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्र से चींटी आदि के लिये अन्न दें—

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयाऽन्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

तदनन्तर हाथ धोकर भस्म लगावें और निम्नांङ्कित मन्त्र से अग्नि का विसर्जन करें—

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥
(शु० य० ८ । २२)

'हे यज्ञ ! तुम [अपनी प्रतिष्ठा के लिये] यज्ञस्वरूप विष्णु भगवान्‌को प्राप्त हो, कर्म के फलरूप से यज्ञपति—यजमान को प्राप्त हो तथा अपनी सिद्धि के लिये तुम अपने कारणभूत वायुदेव की क्रिया-शक्तिको प्राप्त हो, यह हवन सुन्दररूप से सम्पन्न हो। हे यजमान !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्तवनीय चरु, पुरोडाश आदि सब अङ्गों तथा सूक्त, अनुवाक और स्तोत्रों के सहित यह किया जानेवाला यज्ञ तुम्हारा हो, तुम इस यज्ञ का सेवन करो। यह हवनकर्म सुन्दररूप से सम्पन्न हो।'

तत्पश्चात् कर्म में न्यूनता की पूर्ति के लिये निम्नाङ्कित श्लोकों को पढ़ते हुए भगवान् से प्रार्थना करें—

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर यह कर्म भगवान् को अर्पण करें[1]।

अनेन बलिवैश्वदेवाख्येन कर्मणा परमेश्वरः प्रीयतां न मम।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

---

१. अन्त में अर्पण किये हुए ग्रासों को बाहर ले जा कर गौ आदि को दें और हाथ-पैर धोकर शुद्ध हो जायँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मयज्ञ-विधिः

अब संक्षेप में ब्रह्मयज्ञ की विधि दी जा रही है। सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अङ्गुली में पवित्री धारणकर जल ले और देश, काल तथा नाम-गोत्र आदि का उच्चारण करके 'श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञेनाहं यक्ष्ये'—इस प्रकार संकल्प पढ़ें और फिर नीचे लिखे प्रकार से अङ्गन्यास करें।

ॐ तिर्य्यग्विलाय चमसोर्ध्वबुध्नाय छन्दःपुरुषाय नमः। शिरसि।

इस वाक्य को पढ़कर दाहिने हाथ से सिर का स्पर्श करें।

ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः। नेत्रयोः।

यह दो बार पढ़कर दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः । श्रोत्रयोः ।

इसको दो बार पढ़कर दोनों कानों का स्पर्श करें ।

ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः । नासापुटयोः ।

इसको दो बार पढ़कर दोनों नासिकाछिद्रों का स्पर्श करें ।

ॐ अत्रये नमः । वाचि ।

इसको पढ़कर वाक्-इन्द्रिय (मुख) का स्पर्श करें ।

ॐ गायत्र्यै छन्दसेऽग्नये नमः । शिरसि ।

इस वाक्य को पढ़कर मस्तक का स्पर्श करें ।

ॐ उष्णिहे छन्दसे सवित्रे नमः । ग्रीवायाम् ।

इसको पढ़कर गले का स्पर्श करें ।

ॐ बृहत्यै छन्दसे बृहस्पतये नमः । अनूके ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस वाक्य को पढ़कर पीठ के बीच की हड्डी का स्पर्श करें।

ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां द्यावापृथिवीभ्यां नमः। बाह्वोः।

इसको दो बार पढ़कर दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे इन्द्राय नमः। मध्ये।

इसको पढ़कर उदर का स्पर्श करें।

ॐ जगत्यै छन्दसे आदित्याय नमः। श्रोण्योः।

इसको दो बार पढ़कर दोनों नितम्बों का स्पर्श करें।

ॐ अतिच्छन्दसे प्रजापतये नमः। लिङ्गे।

इस वाक्य को पढ़कर लिङ्ग इन्द्रिय का स्पर्श करें।

ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे वैश्वानराय नमः। पायौ।

इसको पढ़कर गुदा इन्द्रिय का स्पर्श करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ अनुष्टुभे छन्दसे विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ऊर्वोः ।

इसको दो बार पढ़कर दोनों ऊरुओं का स्पर्श करें ।

ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे मरुद्भ्यो नमः । अष्ठीवतोः ।

इस वाक्य को दो बार पढ़कर दोनों घुटनों का स्पर्श करें ।

ॐ द्विपदायै छन्दसे विष्णवे नमः । पादयोः ।

इसको दो बार पढ़कर दोनों चरणों का स्पर्श करें ।

ॐ विच्छन्दसे वायवे नमः । प्राणेषु ।

इस वाक्य को पढ़कर नासिका-छिद्रों का स्पर्श करें ।

ॐ न्यूनाक्षरायच्छन्दसे अद्भ्यो नमः । सर्वाङ्गेषु ।

इसको पढ़कर दाहिने हाथ के द्वारा बाएँ अङ्ग का और बाएँ हाथ के द्वारा दाहिने अङ्ग का शिर से लेकर पैरोंतक स्पर्श करें[1] ।

---

१. नीचे के अङ्गों का स्पर्श करने पर हाथ धो लेना चाहिये ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके बाद निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर विनियोग करें।

इषे त्वेत्यादि-खंब्रह्मान्तस्य माध्यन्दिनीयकस्य वाजसनेयकस्य यजुर्वेदाम्नायस्य विवस्वानृषिः गायत्र्यादीनि सर्वाणि छन्दांसि, सर्वाणि यजूंषि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्गोक्ता देवता ब्रह्मयज्ञारम्भे विनियोगः।

हरि ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (शु० य० ३६। ३)

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा व्वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्प्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरन-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माऽघश ँसो ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

(शु० य० १ । १)

ॐ व्रतमुपैष्यन्नन्तरेणाऽऽहवनीयं च गार्हपत्यं च प्राङ् तिष्ठन्नप ऽउपस्पृशति तद्यदप ऽउपस्पृशत्यमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं व्वदति तेन पूतिरन्तरतो मेद्ध्या वा ऽआपो मेध्यो भूत्वा व्व्रतमुपाऽयानीति पवित्रं वा ऽआपः पवित्रपूतो व्व्रतमुपाऽयानीति तस्माद्वा ऽअप ऽउपस्पृशति ॥ (श० ब्रा० १ । १ । १ । १)

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋग्वेद १ । १)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ अग्न ऽआ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
हि होता सत्सि बर्हिषि ॥ (सामवेद १ । १)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।
शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ (अथर्ववेद १ । १ । १)

अथानुवाकान् वक्ष्यामि । मण्डलं दक्षिणमक्षि हृदयम् । अथातोऽधिकारः । फलयुक्तानि कर्माणि । अथातो गृह्यस्थाली-पाकानां कर्म । अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि । पञ्च संवत्सरमयम् , म य र स त ज भ न । गौः । ग्मा, ज्मा । वृद्धिरादैच् । समाम्नायः समाम्नातः ।

आथातो धर्मजिज्ञासा । अथातो ब्रह्मजिज्ञासा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं प्रणम्य मुनयोऽब्रुवन् ।
वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ॥
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

उपर्युक्त उद्धरणों का पाठ करके 'ब्रह्मणे नमः' ऐसा तीन बार उच्चारण करें फिर निम्नाङ्कित श्लोक पढ़कर यह ब्रह्मयज्ञ भगवान् को समर्पित करें।

इति विद्यातपोयोनिरयोनिर्विष्णुरीडितः ।
वाग्यज्ञेनार्चितो देवः प्रीयतां मे जनार्दनः ॥

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संक्षिप्त भोजन-विधिः

बलिवैश्वदेव के बाद अतिथि-पूजनादि से निवृत्त होकर अपने परिवार के साथ भोजन करें। पहले 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मन्त्र का उच्चारण करके अपने आगे जल से चार अँगुल का चौकोना मण्डप बनावें और उसीपर भोजन-पात्र रखकर उसमें घृतसहित व्यञ्जन रखावें तथा अपने दाहिने तरफ जलपात्र रखें, फिर भगवद्बुद्धि से अन्न को प्रणाम करके—

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस मन्त्र का तथा—

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर ॥

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अन्न में तुलसीदल छोड़कर जलसहित अन्न भगवान नारायण को अर्पण करें, फिर दोनों हाथों से अन्न को ऊपर से आवृत कर इस मन्त्र का पाठ करें—

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्पयन् ॥

(शु० य० ३१ । १३)

'परमेश्वर की नाभि से अन्तरिक्ष, शिर से द्युलोक, पैरों से भूमि और कानों से दिशाओं की उत्पत्ति हुई । इस प्रकार परमात्मा ने समस्त लोकों की रचना की ।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तर 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इस मन्त्र से आचमन करके आगे लिखे हुए पाँच मन्त्रों में से क्रमशः एक-एक को पढ़कर एक-एक ग्रास अन्न (जो बेर या आँवले के फल के बराबर हो) मुँह में डालें—

ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ५ ॥

इसके बाद पुनः आचमन करके मौन होकर यथाविधि भोजन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्यकर्म-विधिः

लेखक – याज्ञिकसम्राट् पण्डित वेणीराम गौड

द्विज के लिये जो आवश्यक नित्यकर्म हैं, उन सभी का इस पुस्तक में सुन्दर ढंग से सङ्कलन किया गया है। इस पुस्तक में विभिन्न देवी-देवताओं के प्रातः-स्मरण श्लोक, स्नान की विधि, सन्ध्या, तर्पण, नित्य होम, बलिवैश्वदेव, ब्रह्मयज्ञ, भोजन-विधि, विविध देवी-देवताओं की पूजन-विधि तथा अनेक देवी-देवताओं के महत्त्वपूर्ण स्तोत्र दिये गये हैं। अन्त में परिशिष्ट-भाग भी दिया गया है, जिसमें द्विजमात्र के जानने योग्य महत्त्वपूर्ण आवश्यक बातें दी गई हैं। सन्ध्या, तर्पण, नित्य होम और बलिवैश्वदेव के वेद मन्त्रों का हिन्दी में अर्थ भी दिया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक द्विज के लिये अत्यन्त उपयोगी और संग्राह्य है। पुस्तक का लागतमात्र मूल्य ८–००

प्राप्तिस्थान—चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिवपूजनविधिः

लेखक—याज्ञिकसम्राट् पण्डित वेणीराम गौड

शिवभक्तों के लिये 'शिवपूजनविधिः' पुस्तक प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में वैदिक और पौराणिक मन्त्रों के द्वारा शिव की सुन्दर ढंग से पूजनविधि लिखी गई है। शिवपूजन विधि में आवरण-पूजन, आरती, पुष्पाञ्जलि आदि अनेक शिवपूजनसम्बन्धी विषय दिये गये हैं, जिससे यह पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन गई है। शिवपूजन की ये इससे श्रेष्ठ और कोई पुस्तक नहीं है। १-५०

१ वैदिक देवीसूक्तम्। तान्त्रिकं देवीसूक्तम्, अपराधक्षमापनस्तोत्रम् देव्य-
पराधक्षमापनस्तोत्रसहितम् ०-५०

२ पुरुषसूक्तम्। (माध्यन्दिन शाखीय) सान्वय-संस्कृत-व्याख्या 'सरला'-
हिन्दीभाषा-सहितम् ०-६०

३ शुक्लयजुर्वेदीयसन्ध्योपासनविधिः। (देवर्षि-पितृतर्पणसहितः) ०-७५

४ आळवन्दारस्तोत्रम्। शालिग्रामस्तोत्रम्, रङ्गनाथाष्टकम्, श्रीमदच्युताष्टकम् ०-६०

५ कालभैरवाष्टकम्। तीक्ष्णदंष्ट्रकालभैरवाष्टकम्, दण्डपाण्यष्टकसहितम् ०-४०

प्राप्तिस्थान—चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, दिल्ली